O.P. JINDAL GLOBAL
INSTITUTION OF EMINENCE DEEMED TO BE
UNIVERSITY
A Private University Promoting Public Service

I.D.E.A.S.
OFFICE of
INTERDISCIPLINARY STUDIES

हरियाणा की आवाज़

HARYANA KI AWAAZ Volume III Issue I

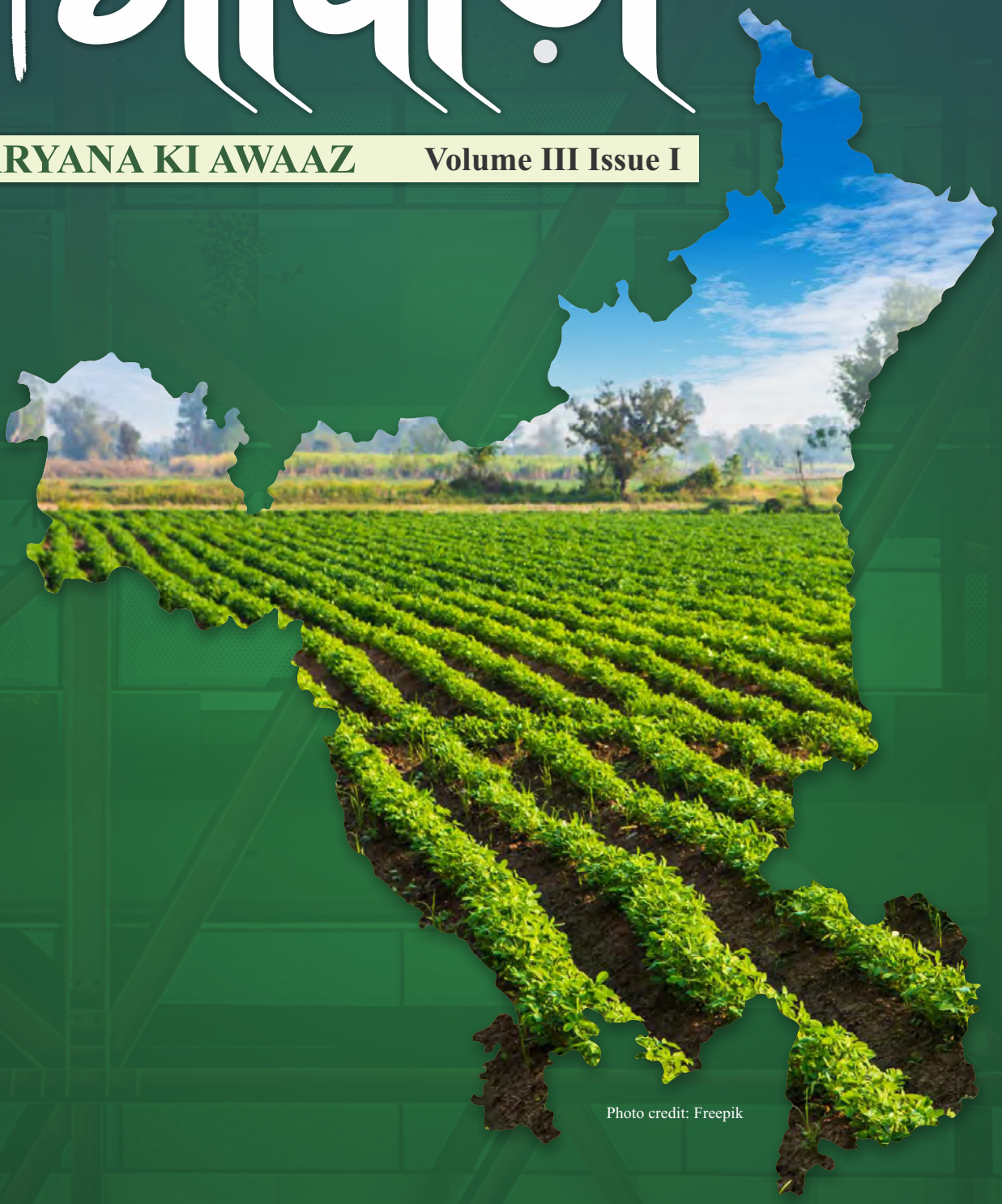

Photo credit: Freepik

आभार

हम इस अंक के सम्पादन, रूपरेखा और प्रस्तुति में योगदान के लिए प्राची हुड्डा और अंकित दहिया को धन्यवाद देना चाहते हैं। इस अंक के हिंदी अनुवाद के लिए वीना हुड्डा के सहयोग को भी धन्यवाद देते हैं।

हम दादा भूरे खां पर मिले सभी रेस्पोंडेंट्स को भी धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने हमारे साथ अपना समय और अनुभव साझा किया।

हरियाणा के नाम

प्राची हुड्डा

क्यूरेटर

हरियाणा के बारे में हमेशा एक सामान्य धारणा रही है: देहाती, अत्यधिक पितृसत्तात्मक और महिलाओं के प्रति हिंसक। इसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र और इसके लोगों का एकपक्षीय चित्रांकन हुआ है। यह चित्रांकन इस क्षेत्र की सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं व बहुमुखी विचारधारा को स्पष्टता से उजागर नहीं करता। साथ ही मास मीडिया और बुद्धिजीवी वर्ग भी यहाँ के लोगों के अनुभवों और सामाजिक भिन्नताओं को समझने में निष्फल रहे हैं ।

“प्रगतिशील” विश्वविद्यालयों में मैंने खुद ये अनुभव किया कि इस क्षेत्र से आने वालों को एक सामान्य धारणा का सामना करना पड़ता है। यह मुख्यतः “तुम हरियाणवी नहीं लगते” या “तुम हरियाणवी की तरह बात नहीं करते” जैसी टिप्पणियों और व्यंग्यों के रूप में होता है। यह भी आंशिक रूप से बॉलीवुड में हरियाणा के लोगों के चित्रण से प्रभावित है, जहां अभिनेता उस भाषा को बोलने की कोशिश करते हैं जो हरियाणा में बोले जाने वाली विभिन्न बोलियों से कहीं भी मेल नहीं खाती। इस सामान्य रूप से किये जाने वाले गलत चित्रण (जो केवल वे लोग करते हैं जो इस क्षेत्र से नहीं हैं) को चुनौती भी दी जा रही है। अब वर्तमान समय में कुछ बुद्धिजीवी और युवा वर्ग द्वारा इन धारणाओं को चुनौती देने और जमीनी स्तर की आवाजों के लिए जगह बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

इस संदर्भ में, यह मासिक अंक “हरियाणा की आवाज़” इस क्षेत्र और इसके लोगों के बारे में अत्यधिक सरल धारणा को चुनौती देने की एक छोटी सी पहल है, जो हरियाणा के लोगों को अपनी कहानियाँ और अनुभव साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इसका उद्देश्य उन्हें उन सक्रिय कर्ता के रूप में प्रस्तुत करना है जो वे हमेशा से रहे हैं, लेकिन जिसके लिए उन्हें कभी पर्याप्त पहचान नहीं मिल पायी। प्रत्येक अंक हरियाणा के सांस्कृतिक विशेषताओं और इसके विविध सामाजिक समूहों के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालेगा।

मैं ओ.पी. जिंदल ग्लोबल विश्वविद्यालय (JGU) के ऑफिस ऑफ़ इंटरडिसिप्लिनरी स्टडीज (IDEAS) की आभारी हूं, जिन्होंने इस पहल को समर्थन प्रदान किया।

वॉल्यूम III – हरियाणा की धार्मिक प्रवृत्तियां

अंक I - हरियाणा के पीर

हरियाणा में रोज़मर्रा की आस्था केवल बड़े और औपचारिक धार्मिक स्थलों तक सीमित नहीं है। यह लोगों के दैनिक जीवन का हिस्सा है। दादा थान, पीर, स्थानीय माताएँ, लोकदेवता और डेरे — ये सब मिलकर ग्रामीण हरियाणा की आध्यात्मिक दुनिया को आकार देते हैं।

गाँवों में सामाजिक और धार्मिक जीवन अक्सर स्थानीय संतों और लोकदेवताओं के इर्द-गिर्द संगठित होता है। इन परंपराओं को जीवित रखने में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। वे साल भर फसल का अन्न, गुड़ और घर में बने साधारण मिष्ठान गाँव के थानों और मढ़ियों पर चढ़ाती हैं। ये चढ़ावे केवल रस्म भर नहीं होते, बल्कि सुरक्षा और कृतज्ञता की अभिव्यक्ति होते हैं। लोग इन देवताओं की शरण में बीमारी और विपत्ति से बचने के लिए जाते हैं, और परिवार तथा पशुधन की कुशलता की कामना करते हैं।

कुछ लोकदेवता, जैसे गुगा पीर, हरियाणा से बाहर भी व्यापक रूप से पूजे जाते हैं। वहीं खेड़ा या दादा थान जैसे स्थल किसी विशेष गाँव या गोत्र से जुड़े होते हैं और उस धरती की स्मृति और पहचान का हिस्सा बन जाते हैं। पितरों को समर्पित स्थानों पर परिवार अपने पूर्वजों को याद करते हैं और उनका आशीर्वाद मांगते हैं। कई बार कोई छोटा-सा गाँव का थान समय के साथ आसपास के इलाकों में भी लोकप्रिय होने लगता है और एक मान्यता प्राप्त तीर्थ का रूप ले लेता है।

ऐसी लोकआस्थाएँ केवल हरियाणा तक सीमित नहीं हैं, पर यहाँ इनकी अपनी अलग छवि है, जो कृषि-आधारित जीवन और स्थानीय स्मृतियों से गहराई से जुड़ी है।

इस अंक में हमने इन जीवंत परंपराओं पर विचार एकत्र किए हैं। लोकदेवताओं और पितृ-स्थलों पर ध्यान केंद्रित करते हुए हमारा प्रयास है कि ग्रामीण हरियाणा की उस आस्था-परंपरा को सामने लाया जाए, जो आज भी लोगों के जीवन का केंद्र है।

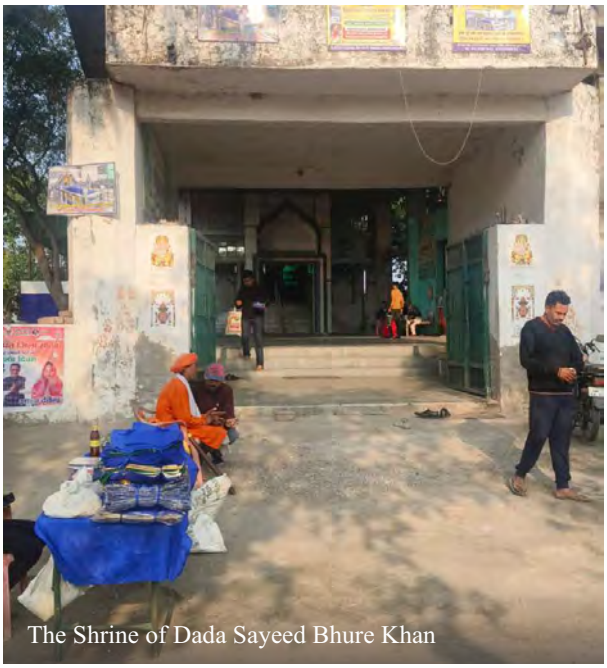

The Shrine of Dada Sayeed Bhure Khan

यामीन, जो लगभग चालीस वर्षों से यहाँ सेवा कर रहे हैं, राठधना के रहने वाले हैं और बचपन से इस दरगाह से जुड़े रहे हैं। उनसे पहले उनके पिता इसकी देखभाल करते थे, और उनसे पहले उनके दादा। इस दरगाह की सेवा उनके परिवार में पीढ़ियों से चली आ रही परंपरा है।

यामीन उस घटना का ज़िक्र करते हैं जिसने स्थानीय स्मृति में भूरे खान की शक्ति को स्थापित कर दिया। सन 1964 में जब सड़क और नाले का निर्माण हो रहा था, तब प्रशासन ने उस समय की छोटी-सी मजार को हटाने की कोशिश की। क्रेन ने तीन बार उसे उठाने का प्रयास किया, लेकिन असफल रही। चौथी बार मशीन ने एक मजदूर को उछालकर नाले में फेंक दिया। पास में मवेशी चरा रहे बच्चे — जिनमें यामीन भी शामिल थे — उसे बाहर निकालकर कुएँ के पानी से साफ़ करके संभाला। गाँव ने इसे संकेत माना कि पीर अपनी जगह से हटना नहीं चाहते थे।

तब से दरगाह वहीं है। सड़क हो या नाला, हर निर्माण उसकी ओर से निकलता है। स्थानीय लोग मानते हैं कि पीर राहगीरों की रक्षा करते हैं। तीखे मोड़ और तेज रफ्तार के बावजूद यहाँ दुर्घटनाएँ प्रायः जानलेवा नहीं होतीं। विश्वविद्यालय के छात्रों की गंभीर दुर्घटनाओं के बाद भी उनके बच जाने की घटनाएँ “बाबा की मेहर” मानी जाती हैं। आस्था हो या संयोग — श्रद्धालुओं के लिए बात साफ है कि सड़क की हिफ़ाज़त पीर करते हैं।

भूरे खान की दरगाह की सबसे बड़ी विशेषता उसकी निरपेक्षता है। जाट, ब्राह्मण, दलित, मुसलमान — सब यहाँ आते हैं। एक ग्रामीण महिला ने सहजता से कहा, "सब आवै हैं... जाट, बामण, मुसलमान।" यहाँ कोई नहीं पूछता कि कौन किस मजहब या जाति से है। लोग मन्नत लेकर आते हैं — नौकरी के लिए, संतान के लिए, बीमारी से राहत के लिए — और मन्नत पूरी होने पर लौटकर धन्यवाद देते हैं। जो जितना समर्थ होता है, उतना चढ़ावा चढ़ाता है — कोई मिठाई या प्रसाद लाता है, तो कोई भंडारा करवाकर पूरे गाँव को खिलाता है।

करीब तीस वर्षों से परिवार सहित यहाँ आने वाले एक युवा स्नातक ने इस दरगाह को "चार्जिंग प्वाइंट" कहा। वह अब शहर में रहता है, पर होली और दीवाली पर यहाँ अवश्य आता है। उसकी बात सीधी थी कि "मानो तो ठीक है, नहीं मानो तो वो कुछ भी नहीं है।"

यहाँ की पूरी व्यवस्था एक तरह की सांझी परंपरा पर टिकी है। मन्नत पूरी होने पर जब भंडारा होता है, तो उत्तर प्रदेश से भजन मंडली बुलाकर आरती की जाती है — और यह सब एक पीर की दरगाह में। कव्वाली और भजन साथ-साथ गूंजते हैं।

मुख्य दरगाह के बाहर एक केसरिया वस्त्रधारी वृद्ध शांत बैठा मिला। उन्होंने अपना परिचय गोरखनाथ परंपरा के अनुयायी के रूप में दिया, जो गोरखनाथ मठ से जुड़े हैं। वे सोनीपत से पैदल चलकर भूरे खान की दरगाह पर दिन बिताने आए थे। उनके लिए नाथ परंपरा और पीर में कोई विरोध नहीं था। उन्होंने कहा, "सब एक ही हैं।"

भूरे खान के भाई काले खान का विश्राम स्थल भी उतना ही पूजनीय है। लोककथाएँ बताती हैं कि दोनों भाइयों की आध्यात्मिक उपस्थिति पूरे क्षेत्र में फैली हुई है — एक यहाँ खेतों के बीच, दूसरा रेलवे लाइन के उस पार बंदेपुर की ओर।

मुख्य दरगाह से आगे दादा थानों की एक और परंपरा दिखाई देती है। कई थान शुरुआत में केवल एक ईंट से बने छोटे-से चिह्न होते हैं। समय के साथ, जब लोगों की मनोकामनाएँ पूरी होती हैं, तो वे लौटकर उसमें सीमेंट, ईंट और श्रम का योगदान देते हैं। धीरे-धीरे वह एक स्थायी संरचना बन जाती है।

जगदीशपुर में पीर और दादा थान केवल आस्था के स्थल नहीं, बल्कि जुड़ाव के केंद्र हैं। नरेला जैसे शहरों में बस चुके परिवार भी यहाँ लौटते हैं, ताकि अपनी जड़ों से संबंध बना रहे। यह दरगाह अलग-अलग जातियों, कुनबों, प्रवासियों और स्थानीय लोगों को एक साथ बाँधे रखती है।

दादा सैय्यद भूरे खान की दरगाह धार्मिक सीमाओं में बँधने से इंकार करती है। यहाँ इस्लामी और हिंदू आस्थाएँ एक ही आँगन में मिलती हैं। ऐसे समय में जब पहचान के आधार पर विभाजन हो रहे हैं, जगदीशपुर एक अलग तस्वीर पेश करता है। यहाँ आस्था बस इतनी-सी है — सच्चे मन से माँगो, तो कोई सुन रहा है।

टीम, हरियाणा की आवाज़

प्राची हुड्डा
लीड
हरियाणा की आवाज़

अंकित दहिया
मैम्बर एसोसिएट
हरियाणा की आवाज़

JGU at a GLANCE

16000+ Students — FEMALE 51% | MALE 49% | UNDERGRADUATE 80% | MASTERS/DOCTORAL 20%

1100+ Faculty — FEMALE 56% | MALE 44%

35 Average age of Faculty Members

45% Faculty Members are Alumni of the top **200** Global Universities

4000+ Faculty & Administrative Staff from **54** countries

15000+ Alumni Network World-Wide

28 Indian States & Union Territories represented by Students

12 SCHOOLS

50+ Programmes

- **30+** Undergraduate Programmes
- **20+** Postgraduate Programmes
- Doctoral Programme

Jindal Global Law School — India's First Global Law School

JINDAL GLOBAL BUSINESS SCHOOL — INDIA'S FIRST MULTI-DISCIPLINARY GLOBAL BUSINESS SCHOOL

Jindal School of International Affairs — India's First Global Policy School

Jindal School of Government and Public Policy — India's First Public Policy School

Jindal School of Liberal Arts & Humanities — India's First Transnational Humanities School

Jindal School of Journalism & Communication — India's First Global Media School

Jindal School of Design & Architecture — India's Global Design and Architecture School

JINDAL SCHOOL OF BANKING & FINANCE — India's First Global Finance School

JINDAL SCHOOL OF ENVIRONMENT & SUSTAINABILITY

Jindal School of Psychology & Counselling — India's First Transdisciplinary Psychology School

JINDAL SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE — India's Global School of Language & Literature Studies

JINDAL SCHOOL OF PUBLIC HEALTH & HUMAN DEVELOPMENT

RESEARCH

9200+ Publications

65+ Interdisciplinary research centres

6 Research & capacity building institutes

- JILDEE — Jindal Institute of Leadership Development and Executive Education
- Jindal Institute of Behavioural Sciences
- IIHEd — International Institute for Higher Education Research & Capacity Building — O.P. Jindal Global University
- Jindal India Institute — Propelling the Indian Century — O.P. Jindal Global University
- Jindal Institute of Haryana Studies
- MJ AS — Motwani Jadeja Institute for American Studies — O.P. Jindal Global University

INTERNATIONAL COLLABORATIONS

600+ Collaborations with International Universities & Higher Education Institutions

10 Forms of Global Partnerships

80+ Countries & Regions

300+ Faculty & Student Exchange Collaborations

100+ Countries represented by Students

RANKINGS & RECOGNITIONS

QS World University Rankings by Subject 2025:

- Ranked No.1 in India — Law & Legal Studies
- Ranked No.1 Private University in India — Arts & Humanities
- Ranked No.1 Private University in India — Politics & International Studies

Times Higher Education:

- Ranked No.1 in India for Law — Times Higher Education Subject Rankings 2026
- Ranked No.2 in India for Psychology — Times Higher Education Subject Rankings 2026

AACSB Accredited:

- Among 6% B-Schools globally with AACSB Accreditation

CONFERRED THE STATUS OF AN **INSTITUTION OF EMINENCE** BY THE MINISTRY OF EDUCATION GOVERNMENT OF INDIA

Sonipat-131001, (NCR of Delhi) | www.jgu.edu.in

JGU - An Initiative of Jindal Foundation